बुँदेलखण्ड का इतिहास

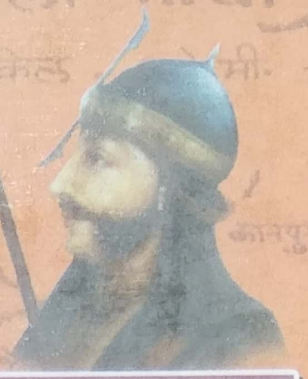

नौवाँ भाग

लेखक - दीवान प्रतिपाल सिंह

प्रकाशक - पृथ्वी सिंह बुन्देला
प्रतिपाल परिसर छतरपुर

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक परिचय

पृथ्वी सिंह बुन्देला

जन्म - ५ जनवरी १९२६ ई.
जन्म स्थान - छतरपुर
पिता - दीवान प्रतिपाल सिंह जू देव
माता - श्रीमती सीता जू
शिक्षा - बी.ए., होम्योपैथिक डिप्लोमा
सम्मान - म.प्र. शासन से उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के लिए सम्मानित शिक्षक, शास. शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर, पुरस्कृत चित्रकार, सम्मानित समाजसेवी।
पता - दीवान प्रतिपाल परिसर
पहरा हाउस, सागर रोड, छतरपुर (म.प्र.)
फोन - 07682-243574
मो. 9926182801

सम्पादक परिचय

डॉ. बहादुर सिंह परमार

जन्म - १६ जुलाई १९६३,
जन्म स्थान - रानीपुरा, (छतरपुर)
शिक्षा - एम.ए., पी-एच.डी.
रचनाएं - 1. अमरकांत का कथा साहित्य
2. बुन्देलखण्ड की छन्दबद्ध काव्य परंपरा
सम्पादन - 1. पत्रिका बुन्देली बसंत
2. बुन्देलखण्ड की साहित्यिक धरोहर
3. छतरपुर जिले की लोक कथाएं
4. बुन्देली व्यंजन आदि
सम्प्रति - शास. महाराजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय छतरपुर में सहा. प्राध्यापक हिन्दी
संपर्क - एमआईजी -7, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी छतरपुर (म.प्र.) मो. 9425474662

Scanned with OKEN Scanner

©कुँ. पृथ्वी सिंह बुन्देला

प्रथम प्रकाशन : सन् 2009

संख्या : 500 प्रतियाँ

कीमत : 300 रुपये

मुद्रक : जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या0
छतरपुर (म.प्र.)

प्राप्ति स्थल : डॉ. हरिसिंह घोष
घोषयाना मुहल्ला, संकट मोचन मार्ग
छतरपुर (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

खण्ड (अ) चंपतराय

- प्रस्तावना १
- वंश २
- महाराज भारतीचंद २
- महाराज मधुकुरशाह २
- राव उदयाजीत ५
- राव प्रेमचंद ६
- कुँवर सेन ७
- मानशाह ८
- भागवंत राय या भगवंत दास ८
- चंपतराय ९
- देश की दुर्गति और उद्धार की सलाह १४
- भुमियावट आरंभ १५
- नौसेरी की चढ़ाई और ओरछा युद्ध १६
- चंपतराव के धावे १७
- नौसेरी को खानजहाँ की सहायता और पृथ्वीराज का बंदी होना १७
- बाँकी खाँ द्वारा सारवाहन की मृत्यु २१
- माता को उपदेश २३
- दिल्ली गमन २४
- कन्धार २४
- षड़यंत्र २५
- जागीर की जप्ती २५
- देश पुनरागमन २६
- भुमियावट २६

Scanned with OKEN Scanner

- ओरछा बहिष्कार २७
- शाहजादों का विरोध २७
- औरंगजेब से नरवर के निकट भेंट २८
- चम्बल पार २९
- समूगढ़ युद्ध ३०
- बहादुर खाँ से अनबन ३०
- औरंगजेब सिंहासन पर ३१
- मनसब तथा जागीर ३१
- सुजा पर चढ़ाई ३१
- मनसब त्याग ३३
- भुमियावट ३३
- सुजा पराजय ३४
- शुभकरण (सूबा की चढ़ाई) ३४
- ऐरच युद्ध ३४
- धरौनी ख्वाजा बका ३५
- शुभकरण-अगोरी-चंदेरी ३५
- सुजान का विचार ३५
- सुजान शुभकरण मंत्र ३६
- चम्पतराय और सुजानराय की सलाह ३६
- शुभकरण से युद्ध ३७
- शुभकरण का तबादला ३७
- सुजानराय का स्तीफा ३८
- चम्पतराय पर चढ़ाई ४०
- चम्पतराय और लाल कुँवरि ४३
- चम्पत-सीतावार-नौकर मोरन का कूँच ४३
- प्रनाश ४४
- चम्पत निर्वाण ४५

Scanned with OKEN Scanner

खण्ड (आ) छत्रसाल

१. वंश ६०
२. जन्म ६१
३. महेवा-शैशव, ४. महेवा विद्याभ्यास ६४
५. ममाना-चंपतप्रनाश ६५
६. सहरा में ७. देवगढ़--अंगदराय से भेंट ६६
८. व्याह-दैलवाड़ा ९. ओरछा ६७
१०. जैसिंह के साथ ६८
११. देवगढ़ दक्षिण ७१
१२. घायल ७३
१३. मंसब त्याग ७६
१४. शिवाजी से भेंट ७७
१५. शुभकरण के पास ८१
१६. सुजान सिंह से भेंट ८३
१७. बलदिवान ८७
१८. देश आगमन तथा भुमियावट ८८
१९. भुमियावट की तैयारी ८९
२०. प्रथम पड़ाव (औंड़ेर) और संगठन २१. बाकी खाँ ९१
२२. प्रथम विजय डुंगासरा तथा मकराई ९२
२३. ब्याह २४. सिरोंज प्रांत ९३
२५. हाशिम युद्ध ९४
२६. धामौनी प्रांत ९५
२७. खालिक युद्ध ९६
२८. केशवराय युद्ध ९८
२९. बाकी खाँ की मेहमानी ९९
३०. सैयद बहादुर युद्ध (नरवर ग्वालियर) ९९
३१. ग्वालियर नगर तथा गिर्द ३२. मनब्बर युद्ध धूम घाट १००
३३. धामौनी सिरोंज प्रांत १०१

Scanned with OKEN Scanner

३४.	हाशिम मनब्बर आनंद राय युद्ध	१०१
३५.	हनूटूक दल, वृद्धि, धावे	१०१
३६.	रण दूल्हा युद्ध	१०४
३७.	सिरोंज प्रांत	१०६
३८.	भिलसा प्रांत	१०६
३९.	शाही सौगात की लूट	१०६
४०.	रूमी युद्ध - बखिया धामौनी	१०६
४१.	दिल्ली दरबार की स्थिति	१०८
४२.	तहवर खाँ युद्ध	१०८
४३.	गुना बजरंगगढ़	११०
४४.	कालिंजर प्रांत	११०
४५.	चिंतामणि सुरकी की नश्यता-तरहबा	११२
४६.	वीरगढ़ युद्ध (बरौंधा)	११२
४७.	धामौनी प्रान्त	११३
४८.	तहवर युद्ध - गौना में	११३
४९.	एरज जालौन हमीरपुर प्रान्त	११४
५०.	पठान दमन	११५
५१.	लतीफ पराजय जिटकरी	११५
५२.	भूमियादमन नौरंगा	११५
५३.	धामौनी प्रान्त	११६
५४.	हमीरपुर प्रान्त - भुमियादमन अर्जुनहर	११६
५५.	लम्बे धावे - धामौनी, सिरोंज, चंदेरी, भेलसा, ग्वालियर	११६
५६.	सिरोंज नरवर धामौनी प्रांत	११९
५७.	झालावाड़	१२०
५८.	ग्वालियर, नरवर, धामौनी, सिरोंज	१२१
५९.	सैयद युद्ध राहतगढ़	१२३
६०.	ओरछा	१२३
६१.	धामौनी	१२५

Scanned with OKEN Scanner

६२. अनवर युद्ध त्योंधा १२७
६३. सहरुद्दीन - निंसभाल १२६
६४. हमीद खाँ युद्ध - चित्रकूट १३२
६५. वीरगढ़ युद्ध १३३
६६. धामौनी, एरच, जालौन १३४
६७. सैयद लतीफ युद्ध कोटरा १३५
६८. जालौन-हमीरपुर १३५
६९. भूमिया दमन बिहूनी १३६
७०. समद युद्ध - जलालपुर १३६
७१. पन्ना १४०
७२. हीरालाल गज सिंह १४१
७३. भिलसा प्रान्त १४१
७४. बहलोल युद्ध १४१
७५. बघेलखण्ड-हमीरपुर, बाँदा आदि १४३
७६. सिहुड़ा विजय १४३
७७. भुमिया दमन-मटौंध युद्ध १४५
७८. धामौनी, जालौन, हमीरपुर १४६
७९. सैयद अफगन युद्ध १४६
८०. प्राणनाथ आगमन-मऊ १४७
८१. द्वितीय अफगन युद्ध १४७
८२. ओरछा सेना १४७
८३. शाहकुली युद्ध-मऊ १४८
८४. राजतिलक १४९
८५. नरेन्द्र शाहगौड़ १४९
८६. मिट्ठू पीरजाद १५०
८७. बीजापुर का सरदार १५०
८८. बहादुर शाह १५१
८९. खानखाना मुनैयम खाँ १५१

Scanned with OKEN Scanner

९०.	लोहागढ़ विजय	१५१
९१.	लोहागढ़	१५२
९२.	महाराजाधिराज	१५५
९३.	गुप्तधन	१५७
९४.	बंगश से युद्ध	१५७
९५.	देहान्त	१७७
९६.	महाराज का शरीर	१७९
९७.	कुटुम्ब	१७९
९८.	बलदिवान तथा सिमरा घराना	१८३
९९.	प्राणनाथ	१९४
१००.	नगर तथा राजधानी	१९८
१०१.	महाराज छत्रसाल का राज्य	२०१
१०२.	शासन प्रबंध	२०८
१०३.	बुन्देलों का प्रबंध	२११
१०४.	छाप	२१२
१०५.	प्रभाव और आत्मविश्वास	२१२
१०६.	प्रजा और प्रजापालन	२१३
१०७.	राज्य विभाग	२१३
१०८.	स्वभाव की सरलता	२१६
१०९.	सहनशीलता	२१६
११०.	सौजन्य महाबली	२१६
१११.	धार्मिक श्रद्धाभक्ति	२१७
११२.	जितेन्द्रियता कवि पत्नी	२१७
११३.	चातुर्य	२१७
११४.	नम्रता	२१८
११५.	गुणियों का आदर और काव्य	२१९
११६.	नगरों के वर्णन से कुछ वृतांत	२२७
११७.	परिशिष्टयाँ	२३४

❄❄❄❄❄

लेखक परिचय

दीवान प्रतिपाल सिंह

पिता - महाराज कुमार दीवान भानु सिंह जू देव
जन्म - पौष कृष्ण ८ बुध, संवत् १९३८ विक्रमी
अवसान - जनवरी १९३७ ई.
जन्म स्थान - ग्राम पहरा, छतरपुर राज्य
शिक्षा - सन् १९०१ ई. में आगरा से मैट्रिकुलेशन
रचनाएं - 1. आर्य देव कुल का इतिहास
2. बुन्देलखण्ड का इतिहास (बारह भागों में)
3. वीर बाला (उपन्यास)
4. खेल शतक
5. खेल पच्चीसी
संपादन - श्रृंगार कुंडली, विदुर, प्रजागर - कृष्णकवि,
छत्रप्रकाश -लाल कवि, होली हजारा

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक दीवान प्रतिपाल सिंह जी ने बुंदेलखण्ड का विशालकाय इतिहास लिखकर अपने देश की सच्ची सेवा की है। यह इतिहास ही उनका यथार्थ जीवन है। दीवान जी जैसे कर्मठ तथा स्वदेश प्रेमी पुरूष के लिए पुण्यमय कार्य करना सर्वथा योग्य ही हुआ है। बुन्देलखण्ड के इतिहास का अभाव हमें बहुत दिनों से खटक रहा था। अवसर पाकर उस अभाव की पूर्ति एक अपने ही प्रिय शिष्य द्वारा हुई यह हमारे लिए गौरव को बढ़ाता है।

■ लाला भगवानदीन 'दीन'

दीवान प्रतिपाल सिंह लिखित बुन्देलखण्ड का इतिहास सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। दुर्भाग्य से अस्सी वर्ष बीतने के बाद भी इसका अब तक प्रथम भाग ही प्रकाशित है। शेष अप्रकाशित हैं। सुखद यह है कि इतने वर्ष बीतने के बाद भी उनके सुपुत्र कुँवर श्री पृथ्वी सिंह उन सभी भागों को सुरक्षित रखे हुए हैं .... जिस दिन सभी खंड प्रकाशित हो जाएंगे यह साहित्य और इतिहास जगत में ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

■ डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंयाँ

Scanned with OKEN Scanner

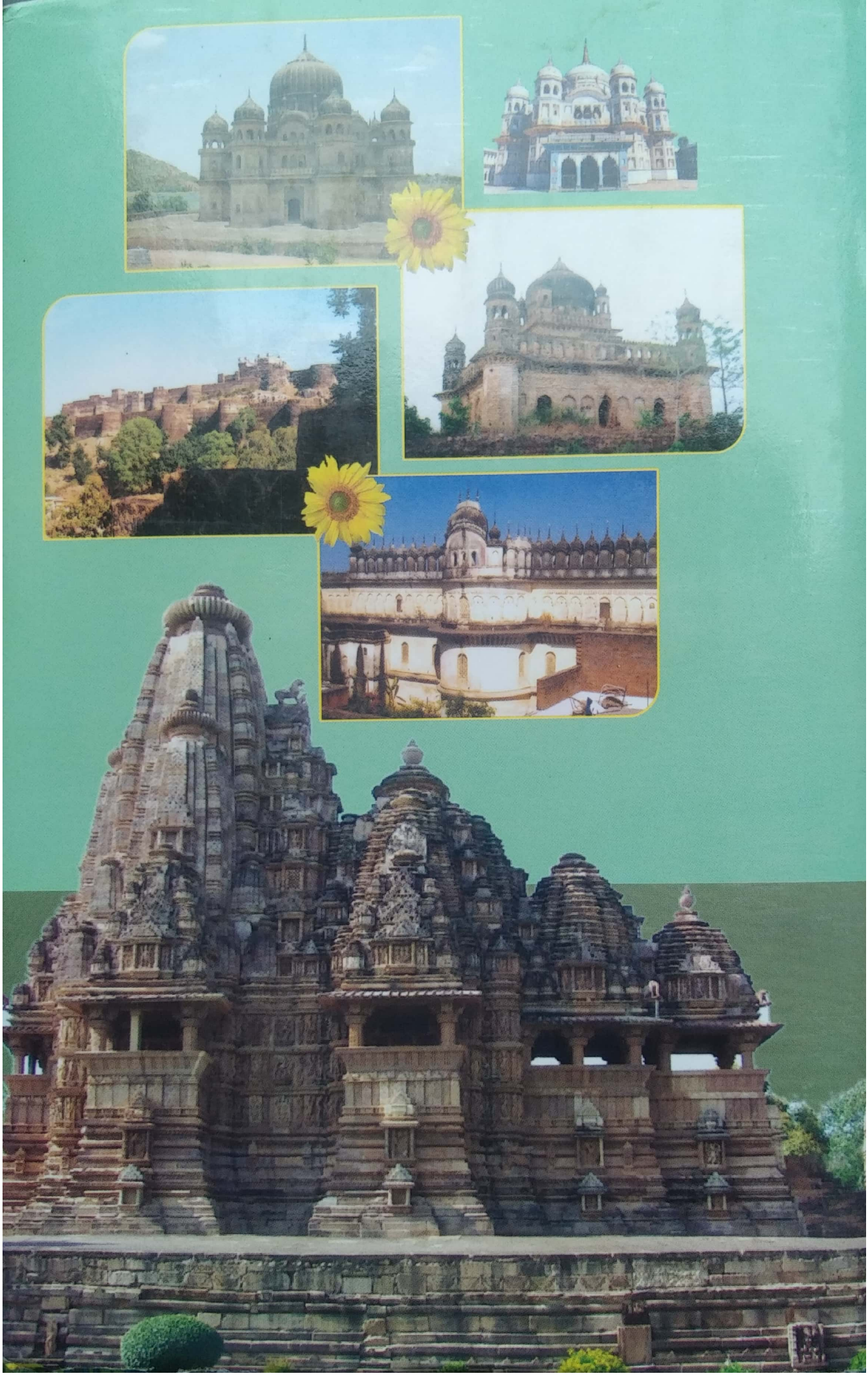

Scanned with OKEN Scanner